theprogressjournals.com

2026 TPJ| VOLUME 4, ISSUE 1
January - March | ISSN – 2584 - 0517

Indexing: *ABCD, Listed in ROAD — ISSN International Centre*
TPJ-15778, (pp – 53 - 58)
DOI: 10.61463/tpj-vol-4-issue-1-115

भारत की नैरेटिव कूटनीति: आंतरिक राजनीति से वैश्विक कूटनीति तक प्रभाव का विश्लेषण

डॉ. सीमा अग्रवाल

सह-प्राध्यापक, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर, त्रिवेणी नगर, जयपुर - 302018

dr.seema.agarwal@csu.co.in

सारांश

कूटनीति में वृतांतों (नैरेटिव्स) की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो शासन और विचारधारा को वैद्यता प्राप्त करने या लोकप्रिय बनाने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। यह शोध पत्र भारत की नैरेटिव्स की कूटनीति के विश्लेषण पर आधारित है। यह शोध पत्र उपनिवेश कालीन भारत में अंग्रेजों द्वारा फैलाए गए नैरेटिव्स तथा प्रतिकार स्वरूप स्वतंत्रता आंदोलन में स्वतंत्रता सेनानियों के विमर्श से लेकर स्वतंत्र भारत के विभिन्न कालों में जनमत को प्रभावित करने वाले विमर्शों की विश्लेषण के साथ वैश्विक स्तर पर भारत की नैरेटिव कूटनीति का विश्लेषण करता है

यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा के नैरेटिव के राजनीतिक- सांस्कृतिक संदर्भों एवं प्रभावों की भी समीक्षा करता है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि ये नैरेटिव किस प्रकार भारत की घरेलू और वैश्विक राजनीति में जनमत, लोकप्रियता और सांस्कृतिक पहचान को प्रभावित कर रहे हैं तथा किस प्रकार समकालीन संघर्षरत विश्व में भारत की ज्ञान परंपरा एक वैकल्पिक और मानवीय विश्वदृष्टि प्रदान कर सकती है।

शोध प्रश्न एवं पद्धति

शोध में मुख्य प्रश्न यह है कि क्या नैरेटिव कूटनीति भारत की चुनावी राजनीति और जनमत के निर्माण में निर्णायक भूमिका निर्वहन करने के साथ अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सॉफ्ट पावर और सांस्कृतिक आधार को सुदृढ़ करने में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। तथा क्या भारत इन कथाओं के माध्यम से वैश्विक राजनीति में एक वैकल्पिक नैरेटिव प्रस्तुत कर सकता है।

शोध पद्धति गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन पर आधारित है।

बीज शब्द : *नैरेटिव, कूटनीति, विमर्श, वृत्तांत, भारतीय ज्ञान परंपरा*

"© 2025" TPJ. All Rights Reserve

2026 TPJ| VOLUME 4, ISSUE 1
January - March | ISSN – 2584 - 0517

Indexing: *ABCD, Listed in ROAD — ISSN International Centre TPJ-15778, (pp – 53 - 58)*
DOI: 10.61463/tpj-vol-4-issue-1-115

प्रस्तावना

सामान्यतः नैरेटिव या वृत्तांत वे, कथा ,कहानी या फ्रेमवर्क है किसी स्थिति या घटनाओं की श्रृंखला को विशेष दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने या समझाने का प्रयास करते हैं।

हम क्या हैं, कौन थे और क्या कर सकते हैं? अपनी और दूसरों की दृष्टि में हमारी पहचान क्या है? जब इन सभी सवालों के जवाब को यदि किसी एक शब्द में व्यक्त करना हो, तो उसे नैरेटिव (Narrative) अर्थात् विमर्श कहा जा सकता है। ये विमर्श हमारी विश्लेषण करने की शक्ति, हमारे चिंतन की सीमा, हमारी जानकारी की परिधि और ज्ञान को बहुत अधिक प्रभावित करते हैं। **(1)** पुंज बलवीर,2025

रणनीतिक नैरेटिव वे कथाएँ हैं जिनके माध्यम से राज्य अपनी पहचान, भूमिका और उद्देश्य को परिभाषित करते हैं। **(2)** (Miskimmon et al., 2013)

किसी भी देश की आंतरिक राजनीति एवं वैश्विक कूटनीति में वृतांतों (नैरेटिव्स) की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो शासन, सत्ता और विचारधारा को वैद्यता प्राप्त करने या लोकप्रिय बनाने के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

प्राचीन भारतीय परंपरा की लोक कथाएं एवं विमर्श

भारत में भी प्राचीन काल से ही राज्य नीति और मूल्यों के प्रसार एवं वैधता में कथाओ, संवादों और वृतांतों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है क्योंकि इनके माध्यम से किसी भी बात को समझाना या प्रभावित करना अधिक सहज और सुगम होता है। भारतीय परंपरा की ये कहानियां या वृतांत नैतिकता, नेतृत्व और व्यक्तिगत विकास के मामलों में मार्गदर्शन करने के साथ ही संस्कृति और सामाजिक राजनीतिक मान्यताओं का प्रसार भी करते हैं।**(3)**

https://www.drishtiias.com/hindi/blog/life-lessons-hidden-in-indian-folktale

भारतीय ज्ञान परंपरा के रामायण, महाभारत, बौद्ध और जैन दर्शन के महत्वपूर्ण ग्रंथों में राजनीतिक एवं नैतिक वृतांतों के अनेक उल्लेख है जिनमें लोक संग्रह, प्रजा योगक्षेम, धर्म, न्याय, वसुधैव कुटुंबकम, राजधर्म, राम राज्य इत्यादि नैरेटिव्स का सामाजिक-राजनीतिक विमर्श दिखाई देता है। इन नॉरेटिव्स ने प्राचीन भारत के साथ-साथ आधुनिक भारत की राजनीति पर भी प्रभाव डाला है। भारतीय राजनीति और समाज समकालीन परिस्थितियों के साथ-साथ अपनी संस्कृति और दार्शनिक परंपराओं से गहरा जुड़ा हुआ है इसीलिए ये मूल्य या विमर्श आज भी भारत में राजनीतिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं।**(4)** (Radhakrishnan, S. 1923).

जन मानस को प्रभावित करने वाले इस प्रकार की विमर्श केवल प्राचीन भारत की लोक कथाओं में ही नहीं दिखाई देते हैं अपितु भारत के इतिहास के विकास क्रम के विभिन्न कालों में भिन्न-भिन्न रूपों में शासन को वैद्यता प्रदान करने के लिए प्रयोग किए जाते रहे हैं। ब्रिटिश काल, स्वतंत्रता आंदोलन, स्वतंत्रता के बाद एवं समकालीन भारतीय राजनीति में अलग-अलग वृतांतों का प्रयोग किया गया

ब्रिटिश कालीन भारत के विमर्श (नैरेटिव)

औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश शासन द्वारा भारत पर अपने शासन को दृढ़ करने एवं भारतीय जनता के मनोबल को गिराने के लिए विभिन्न नरेटिव्स का प्रयोग किया गया। अंग्रेजों ने उपनिवेशवाद को वैध ठहराने के लिए, श्वेत जाति का भार (white man's burden) , भारतीय सभ्यता पिछड़ी, भारत कभी एक राष्ट्र नहीं था, डिवाइड एंड रूल , पूर्व का विकृत चित्रण, अंग्रेजी शिक्षा की श्रेष्ठता, ,आर्य आक्रमण सिद्धांत की कहानी का प्रयोग किया जिसके अनुसार आर्य भी यहां के मूल निवासी नहीं थे वे बाहर से आए आक्रमणकारी थे ऐसी कहानी का प्रचार करने में उनका उद्देश्य भारत के लोगों में राष्ट्रवाद की भावना को समाप्त करना था ताकि वे इस भ्रम का शिकार होते रहे कि उनके पूर्वज भी विदेशी थे। इसी तरह एक विमर्श (नैरेटिव) यह बनाया गया कि 1947 से पहले

"© 2025" TPJ. All Rights Reserve

2026 TPJ| VOLUME 4, ISSUE 1
January - March | ISSN – 2584 - 0517

Indexing: *ABCD, Listed in ROAD — ISSN International Centre*
TPJ-15778, (pp – 53 - 58)
DOI: 10.61463/tpj-vol-4-issue-1-115

भारत राष्ट्र नहीं था और अंग्रेजों ने इस देश को एक सूत्र में बांधा और एक लोकतांत्रिक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र की शिक्षा प्रदान की जिनका उद्देश्य अंग्रेजी शासन को राजनीतिक समर्थन के साथ नैतिक समर्थन प्राप्त करना था। इसी तरह ब्रिटिश शासन ने अपनी फूट डालो राज करो की विभाजनकारी नीति के द्वारा भारतीय समाज की कमजोर कड़ियों को पहचान कर हिंदू बना मुस्लिम, हिंदू बनाम सिख द्रविड़ बनाम आर्य ,दलित बनाम शेष हिंदू समाज, राजा बनाम प्रजा, दक्षिण भारत बनाम उत्तर भारत इत्यादि विमर्श या नॉरेटिव्स के माध्यम से भारत में लंबे समय तक शासन किया और देश के बहुलतावादी और समरसता पूर्ण स्वरूप को तोड़ने का काम किया। इसी प्रकार 1857 की क्रांति (स्वतंत्रता संग्राम) को मात्र सैनिक विद्रोह सिद्ध करने का नरेटिव गढ़ा गया तथा इस प्रकार के विमर्श बनाकर अंग्रेजों ने भारतीय जनता के मनोबल को कमजोर करने उन्हें मानसिक रूप से गुलाम बनाने का कार्य किया। **(5)** (पुंज बलवीर,2025)

स्वतंत्रता आंदोलन के विमर्श (नैरेटिव)

ब्रिटिश शासन के खिलाफ स्वतंत्रता आंदोलन करने वाले स्वतंत्रता सेनानियों ने स्वराज, स्वदेशी, भारत माता, अहिंसा, सत्याग्रह, और राष्ट्रवाद जैसे नैरेटिव्स का प्रयोग कर भारतीय जनता को एक सूत्र में बांध कर जन आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया तथा अंग्रेजों द्वारा फैलाए गए भ्रामक कहानियों एवं नरेटिव्स को तोड़ने का प्रयास किया। औपनिवेशिक शासन के दुष्चक्र को तोड़ने के लिए भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों ने ऐसे narratives विकसित किए, जिन्होंने जनमानस को जागृत किया और औपनिवेशिक शासन को चुनौती दी। **(6)** (Chandra et al., 1989)।

लोकमान्य तिलक द्वारा "**स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है**" के नरेटिव के माध्यम से स्वतंत्रता को सबसे आवश्यक अधिकार के रूप में स्थापित कर जनता को विदेशी गुलामी के प्रति जागरूक किया और स्वतंत्रता की मांग को बल दिया। **(7)** (Sarkar, 1983)

इसी प्रकार "**भारत माता और भारत एक राष्ट्र है**" के नैरेटिव के द्वारा ब्रिटिश शासन के इस दावे का खंडन किया गया कि भारत एक राष्ट्र नहीं है तथा भारत की साझी विरासत और साझी संस्कृति की कहानियां प्रस्तुत की गई जिसने भारत को स्वतंत्र करने की मांग को वैधता तथा क्रांतिकारी राष्ट्रवाद को जन्म दिया। **(8)** (Anderson, 1983)

महात्मा गांधी ने अहिंसा, सत्याग्रह और राम राज्य जैसे नैरेटिव्स का ब्रिटिश सरकार की नैतिक वैधता को समाप्त करने तथा भारत की आजादी के लिए जन समर्थन और वैश्विक समर्थन प्राप्त करने में प्रयोग किया। इसी प्रकार औपनिवेशिक शोषण को उजागर करने वाली दादाभाई नौरोजी की ड्रेनेज थ्योरी ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ असंतोष को पैदा करने में सहयोग दिया।

इन नैरेटिव्स का राष्ट्रवाद की भावना का विकास कर देश को आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

स्वतंत्र भारत की राजनीति के विभिन्न विमर्श (नैरेटिव)

स्वतंत्र भारत ने लोकतांत्रिक व्यवस्था को चुना और लोकतंत्र में चुनाव की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और चुनाव जीतने के लिए भिन्न-भिन्न राजनीतिक वालों द्वारा भिन्न-भिन्न समय पर अलग-अलग नरेटिव्स का प्रयोग किया गया। ये नैरेटिव्स चुनावी प्रक्रिया के जटिल ताने-बाने को बुनने वाले धागों की तरह काम करते हैं। इन विमर्शों (नैरेटिव) में एकजुट करने या विभाजित करने, प्रेरित करने या निराश करने की शक्ति होती है, जो न केवल चुनाव के परिणाम को बल्कि कथाओ या विमर्शों से गहराई से जुड़े राष्ट्र के भाग्य को भी आकार देती हैं। **(9)**Chintan India foundation

स्वतंत्रता के बाद जनमत को प्रभावित करने के लिए, चुनाव जीतने के लिए और राजनीतिक वैद्यता प्राप्त करने के लिए अलग-अलग दलों और नेताओं द्वारा अपने अपने नरेटिव्स बनाए गए।

"© 2025" TPJ. All Rights Reserve

2026 TPJ| VOLUME 4, ISSUE 1
January - March | ISSN – 2584 - 0517

Indexing: *ABCD, Listed in ROAD — ISSN International Centre TPJ-15778, (pp – 53 - 58)*
DOI: 10.61463/tpj-vol-4-issue-1-115

1947 से 1964 तक नेहरू युग में भारत के पुनर्निर्माण के लिए राष्ट्र निर्माण,समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता, गुटनिरपेक्षता, पंचशील तथा आर्थिक नियोजन जैसे नरेटिव्स का प्रयोग किया गया। जिसके द्वारा राष्ट्र को एकता के सूत्र में बंधने, विविधता में एकता स्थापित करने, योजनाबद्ध विकास करने, सार्वजनिक क्षेत्र की स्थापना करने लोकतांत्रिक संस्थाओं का विकास करने तथा स्वतंत्र भारत की स्वतंत्र विदेश नीति का अनुसरण करने संबंधी कथाओं (narratives) का प्रचार कर प्रचंड जन समर्थन प्राप्त किया गया ।

1964-1980 के काल में कांग्रेस पार्टी और उनके नेता इंदिरा गांधी ने गरीबी हटाओ के नरेटिव के माध्यम से लोकप्रिय राजनीति एवं कल्याणकारी योजनाओं के लिए समर्थन प्राप्त किया तथा चुनाव में भारी बहुमत से जीत प्राप्त की। साथ ही एक मजबूत केंद्र के नरेटिव को भी गढ़ा गया जिसके माध्यम से शक्ति के केंद्रीकरण और आपातकाल जैसे कार्यों को भी वैद्यता देने का प्रयास किया गया। **(10)** Kohli, A. (2004)

1980 के बाद के दशक में भारतीय राजनीति में एक दल के प्रभुत्व की समाप्ति हुई तथा राजनीति में प्रचारित किए जाने वाले नरेटिव्स या विमर्शों में विविधता दिखाई देने लगी। यह विविधता विशेष रूप से क्षेत्रीय राजनीति और पहचान के संकट से जुड़ी हुई थी। क्षेत्रीय आकांक्षाओं के विमर्शों ने और क्षेत्रीय दलों की विभाजक राजनीति को बढ़ावा दिया तथा जाति, धर्म और क्षेत्र संबंधी पहचान के विमर्शों तथा गठबंधन राजनीति को जन्म दिया।

1991 के बाद देश में उदारीकरण निजीकरण और वैश्वीकरण का युग प्रारंभ हुआ तथा शाइनिंग इंडिया और भारत एक उभरती आर्थिक शक्ति जैसे नैरेटिव्स ने भारतीय राजनीति को प्रभावित किया।

समकालीन भारतीय राजनीति में नया भारत, आत्मनिर्भर भारत, सबका विकास, विकसित भारत, राष्ट्रवाद तथा भारतीय ज्ञान परंपरा के “रामराज्य”, “धर्म”, “आत्मनिर्भरता” और “वसुधैव कुटुम्बकम्” जैसे narratives पुनः राजनीतिक विमर्श के केंद्र में हैं। **(11)** NITI Aayog. (2021)

समकालीन भारतीय राजनीति में भारतीय ज्ञान परंपरा के सांस्कृतिक -ऐतिहासिक वृत्तांतों का प्रयोग भारत की गौरवपूर्ण संस्कृति और सभ्यता की प्रतिष्ठा एवं राष्ट्रवाद की भावना के प्रसार के लिए किया जा रहा है। इन वृतांतों का प्रयोग राष्ट्र की विविधता पूर्ण संस्कृति, विरासत, स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान, राष्ट्रीय गौरव, भाषा उत्सव क्षेत्रीय त्योहारों, रीति रिवाज , महत्वपूर्ण दिवस तथा आजादी के अमृत महोत्सव के आयोजन में किया जा रहा है जिससे मतदाताओं के साथ भावनात्मक जुड़ाव बनता है और विविधता में एकता के आदर्श को बल मिलता है। वैश्वीकरण के आर्थिक युग में भारत को वैश्विक आर्थिक महाशक्ति के रूप में प्रस्तुत करने वाले विकसित भारत 2047, जी-20 के भारतीय स्वरूप ,विकास, रोजगार सृजन , गरीबी उन्मूलन, लोकल फोर वोकल की कहानियाँ बुनते हुए मतदाताओं को आर्थिक खुशहाली और सामाजिक प्रतिष्ठा और समावेशन के सपने दिखाते हैं।**(12)** Chintan India foundation

इन्हीं के साथ-साथ सामाजिक न्याय के लिए दलित विमर्श, लैंगिक समानता के लिए महिला आंदोलन, आर्थिक न्याय के लिए किसान विमर्श और सतत विकास के लिए पर्यावरणीय विमर्श भी भारतीय राजनीति में साथ-साथ चलते रहे हैं।

चुनावी राजनीति, जनमत और मतदान व्यवहार पर इन नरेटिव्स का बहुत प्रभाव रहता है। यह नैरेटिव्स जाति, धर्म, लिंग और अलग-अलग आयु वर्ग के लोगों के लिए अलग-अलग रूप से गढ़े जाते हैं और इनका भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ता है। भावनात्मक रूप से प्रभावित और पहचान पर आधारित ये राजनीतिक विमर्श चुनावी राजनीति और मतदान व्यवहार को बहुत अधिक प्रभावित कर रहे हैं। आज ये विमर्श ही दलों की पहचान और कूटनीति को निर्धारित करते हैं लोगों की सोच को बनाते हैं और मतदाताओं को एकजुट कर चुनाव और राजनीति की दशा और दशा को तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आज

"© 2025" TPJ. All Rights Reserve

2026 TPJ| VOLUME 4, ISSUE 1
January - March | ISSN – 2584 - 0517

Indexing: *ABCD, Listed in ROAD — ISSN International Centre TPJ-15778, (pp – 53 - 58)*
DOI: 10.61463/tpj-vol-4-issue-1-115

विमर्श की राजनीति और उसके रणनीतिकार केंद्र में हैं। **(13)** The Effect of Narrative in Indian Politics: Mr. Pragun Kumar N) https://www.ijfmr.com/papers/2025/3/47776.pdf

इन नैरेटिव्स का न केवल घरेलू राजनीति में जनमत को प्रभावित करने अपितु वैश्विक राजनीति में भी सॉफ्ट पावर या सांस्कृतिक कूटनीति के रूप में प्रयोग किया जा रहा है।

आज भारत को एक प्रभावशाली सॉफ्ट पावर देश के रूप में जाना जाता है, जिसका कारण हजारों वर्षों में विकसित विशाल सभ्यता और राजनीतिक व्यवस्था तथा प्राचीन ज्ञान परंपरा के वसुधैव कुटुंबकम, न्याय, "सह-अस्तित्व,अहिंसा, शांति, सर्वजन हिताय", सर्व धर्म समभाव, राजधर्म जैसे सांस्कृतिक नरेटिव्स है जो वैश्विक स्तर पर भारत को एक शांतिप्रिय, समावेशी और नैतिक शक्ति के रूप में स्थापित करते हैं। **(14)** https://www.iasgyan.in/rstv/perspective-indias-soft-power-a-comprehensive analysis?utm_source=chatgpt.com

सॉफ्ट पावर में संस्कृति, राजनीतिक नरेटिव्स और विदेश नीतियां शामिल हैं। इसे अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक संबंधों में एक प्रेरक शक्ति माना जाता है जिसमें किसी राष्ट्र के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राजनयिक प्रभाव का उपयोग शामिल होता है। भारत को स्वयं को वैश्विक मंच पर एक जिम्मेदार और प्रभावशाली खिलाड़ी के रूप में प्रस्तुत करने के लिए सॉफ्ट पावर बहुत प्रासंगिक है। **(15)** मोहन, सी. आर. (2019)

नैरेटिव पावर, सॉफ्ट पावर का ही हिस्सा है लेकिन उसकी तुलना में मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक स्तर पर अधिक प्रभावी है। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों, पश्चिमी वैधता के संकट, लोकतंत्र को पैदा हो रहे खतरों, निर्णयों पर जनता के बढ़ते प्रभाव, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म के बढ़ते प्रभाव के कारण, राज्य की शक्ति मुख्य रूप से धारणाओं को गढ़ने, वैश्विक बहसों को आकार देने और उन्हें विश्व भर में फैलाने की उसकी क्षमता पर निर्भर करती है। इसीलिए अंतरराष्ट्रीय राजनीति में कूटनीतिक सफलता के लिए किसी देश को राष्ट्रीय हित के साथ नैरेटिव कूटनीति में भी प्रभावशाली होना चाहिए। आज भारत वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान, वैधता और नेतृत्व को प्रदर्शित करने के लिए नैरेटिव कूटनीति का अत्यंत कुशलतापूर्वक और व्यवस्थित रूप से उपयोग कर रहा है। इसमें मीडिया, बॉलीवुड फिल्म और डिजिटल प्लेटफॉर्म भी एक बड़ी भूमिका निभा रहे हैं

भारत की नैरेटिव कूटनीति का प्रभावी उपयोग कोविड-19 महामारी के समय मिला, जब उसने वैश्विक असमानता के चरम पर विकासशील देशों को टीके उपलब्ध कराकर 'वैक्सीन मैत्री' पहल शुरू की। इससे भारत के वैश्विक कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध एक जिम्मेदार राष्ट्र और वैश्विक स्वास्थ्य प्रशासन में एक विश्वसनीय भागीदार के कूटनीतिक विमर्शों को बल मिला। इसी तरह G 20 के मेजबान देश के रूप में भारत को और शासन के समावेशी रूप,वसुधैव कुटुंबकम और वैश्विक दक्षिण की आवाज के रूप में भारत के नैरेटिव कूटनीति को समर्थन मिला। **(16)** https://www.ijfmr.com/papers/2026/1/67798.pdf

वर्तमान में भारतीय ज्ञान परंपरा और उसकी वर्तमान समस्याओं के समाधान में उपयोगिता के वृत्तांत ने भारत की नरेटिव पावर में वृद्धि की है। प्राचीन सांस्कृतिक परंपराओं और आधुनिक वैश्विक मुद्दों को जोड़कर, भारत परंपरा, सार्वभौमिकता और आधुनिकता को जोड़ने या जारी रखने का वृत्तांत प्रस्तुत करता है और स्वयं को पश्चिमी देशों से अलग करता है साथ ही तनावग्रस्त विश्व को शांति स्थापना, मानसिक स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण के लिए विकल्प भी प्रदान करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा और उसकी लोक-कथाएँ केवल अतीत की स्मृतियाँ नहीं, बल्कि भविष्य की कूटनीतिक पूँजी हैं। नरेटिव कूटनीति के युग में ये कथाएँ भारत को एक नैतिक, समावेशी और सभ्यतागत शक्ति के रूप में प्रस्तुत करती हैं। इस प्रकार, भारत की लोक-परंपरा वैश्विक

"© 2025" TPJ. All Rights Reserve

2026 TPJ| VOLUME 4, ISSUE 1
January - March | ISSN – 2584 - 0517

Indexing: *ABCD, Listed in ROAD — ISSN International Centre TPJ-15778, (pp – 53 - 58)*
DOI: 10.61463/tpj-vol-4-issue-1-115

राजनीति में न केवल संवाद का माध्यम बनती है, बल्कि वैकल्पिक विश्वदृष्टि भी प्रदान करती है।

निष्कर्ष और संभावनाएं

समकालीन राजनीति में घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जनमत को प्रभावित करने में नरेटिव्स की भूमिका में निरंतर वृद्धि हो रही है। भारत की आंतरिक और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से नए भारत और सद्भावना पूर्ण विश्व के निर्माण का विचार एक शक्तिशाली नैरेटिव के रूप में उभरा है, जो विश्व गुरु भारत की कल्पना ,आत्मनिर्भर भारत, सांस्कृतिक गौरव , राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आधारित है। भारतीय ज्ञान परंपरा इस दृष्टिकोण को और गहन बनाती है, क्योंकि यह राजनीति को केवल तात्त्विक या प्रशासनिक संदर्भ में नहीं, बल्कि धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक चेतना के रूप में देखती है। आवश्यकता इस बात की है कि नैरेटिव्स का प्रयोग सकारात्मक रूप में किया जाए तथा वे व्यावहारिक समाधानों पर आधारित हों। घरेलू राजनीति में भ्रमित किए जाने वाले नैरेटिव्स से बचते हुए एक सहभागी समावेशी राजनीति का निर्माण करने वाले विमर्शों को बल दिया जाना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत अपनी नैरेटिव कूटनीति का इस प्रकार प्रयोग करे कि संपूर्ण विश्व में उसके प्रभाव और वैधता में वृद्धि हो और वह एक विश्वसनीय सहयोगी और संघर्षों के समाधान करने वाली शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हो। नैरेटिव्स का समझदारी एवं सजगता से प्रयोग करके भारत नैरेटिव कूटनीति के माध्यम से संघर्षरत विश्व में एक महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन कर सकता है।

संदर्भ सूची

1. पुंज बलवीर,(2025), नरेटिव का मायाजाल, प्रभात प्रकाशन
2. Miskimmon et al., 2013)
3. https://www.drishtiias.com/hindi/blog/life-lessons-hidden-in-indian-folktale
4. Radhakrishnan, S. (1923). Indian Philosophy. Oxford University Press.
5. पुंज बलवीर, (2025), नरेटिव का मायाजाल, प्रभात प्रकाशन
6. Chandra, B., Mukherjee, A., & Mukherjee, M. (1989). India's Struggle for Independence. Penguin.
7. Sarkar, S. (1983). Modern India. Macmillan.
8. Anderson, B. (1983). Imagined Communities. Verso.
9. https://chintan.indiafoundation.in/articles/narratives-in-bharats-elections-from-identity-to-influence-democracy-to-warfare/?utm
10. Kohli, A. (2004). State-Directed Development.
11. NITI Aayog. (2021). Atmanirbhar Bharat Reports.
12. chintan.indiafoundation (Narratives in Bharat's Elections: From Identity to Influence, Democracy to Warfare), Article by Prabhat Ranjan
13. (The Effect of Narrative in Indian Politics: Mr. Pragun Kumar N) https://www.ijfmr.com/papers/2025/3/47776.pdf
14. https://www.iasgyan.in/rstv/perspective-indias-soft-power-a-comprehensiveanalysis?utm_source=chatgpt.com
15. मोहन, सी. आर. (2019), "कल्चरल डिप्लोमेसी एंड इंडिया रीजनल स्ट्रेटेजी", कार्नेगी इंडिया, पृष्ठ 10-15
16. https://www.ijfmr.com/papers/2026/1/67798.pdf

"© 2025" TPJ. All Rights Reserve